अनूदित मैथिली साहित्यक गद्य

मैथिली साहित्य मे जहिया आधुनिकताक प्रथम उन्मेष होइत अछि, अनुवादक प्रारम्भ सेहो तहिए सँ भ' जाइत अछि। ई अकारण नहि थिक। आधुनिक भाव-बोधक प्रवेशक संग जे उदारता आ विद्रोह-धर्मिता आयल तकर पहिल प्रस्फुटन तेँ हम सभ ओतय देखैत छी, जतय 'प्रवेश निषेध' बला विषय-वस्तु दिस सेहो रचनाकारक ध्यान आकृष्ट होइत छनि, आ दोसर जे साहित्यक नव-सौन्दर्यशास्त्र रचनाकार लोकनिक भीतर रच' बस' लगैत छथि। मैथिली साहित्य मे अनुवादक प्रवेश सेहो एतहि होइत अछि। चन्दा झा, जनिका हमरा लोकनि आधुनिक मैथिली साहित्यक प्रथम पुरुष मानैत छियनि, प्रथम अनुवादक सेहो (वैह) भेलाह। चन्दा झा विद्यापतिक कथा-ग्रन्थ 'पुरुष-परीक्षा'क मैथिली अनुवाद कयने छलाह, जे प्रथम अनूदित पोथी थिक, प्रसिद्ध महाकवि लालदास सेहो थोड़-बहुत अनुवाद कयलनि। 'स्त्रीधर्मशिक्षा' नामेँ हुनक एक पोथी प्राप्त होइछ, जाहि मे विषय-संबद्ध संस्कृत श्लोक सभक अनुवाद देल गेल अछि।

अपन अनुवाद-प्रक्रियाक मादे चन्दा झाक विचार हमरा लोकनि केँ प्राप्त नहि अछि। मुदा, हुनक सोच, जे हुनक सम्पूर्ण साहित्य मे अनुस्यूत अछि, एहि बात दिस पर्याप्त संकेत दैत अछि जे मैथिली मे अनुवादक प्रक्रिया कोन उद्देश्य सँ प्रारम्भ भेल। एकर सर्वोपरि उद्देश्य निश्चित रूप सँ मिशनरी भावना सँ प्रेरित छल—दोसर भाषाक साहित्य सँ अपन भाषाक साहित्य केँ समृद्ध करब। मुदा, ईहो बात कम महत्त्वपूर्ण नहि थिक जे चन्दा झा सदृश लेखक, जे कि 'साहित्य जीवनक लेल' बला सिद्धान्तक पक्षधर छलाह, एक खास जीवनमूल्यक प्रवक्ता छलाह, आ तेँ अनुवाद लेल जाहि पोथी केँ ओ चुनलनि, से 'पुरुष-परीक्षा' (नीति आ बोधकथा ग्रन्थ) छल 'मृच्छकटिक' नहि छल। ओ विद्यापतिक पोथी चुनलनि, तकरा पाछाँ निश्चिते 'स्वदेश-स्वधर्म'क अवधारणा छल, मुदा एहि 'स्व' केर विस्तार लगातार होइत गेल, आ ई विधा क्षेत्रीयताक सीमा मे अटकल नहि रहल। सामान्य साक्षर जनता, जे संस्कृत नहि जनैत छल, तकरा धरि गौरवमय नीति-संदेश केँ पहुँयेबाक लोकोपकार-भावना सेहो एहि संग छल, यद्यपि कि तहिया साहित्य पढ़ल कम, सुनल बेसी जाइत छल।

ई बात बहुत स्पष्ट अछि जे पं. चन्दा झा नीक अनुवादक नहि छलाह।

अनुवाद-विज्ञानक तात्त्विक बोध हुनक मे नहि छलनि। ई स्पष्ट होयब जरूरी थिक जे मौलिक रचना-शीलता 'एक' बात थिक आ अनुवाद एहि सँ भिन्न। अनुवाद जतबा कला थिक, ओतबे विज्ञान, आ तें एकर बोध अर्जित आ विकसित कर' पड़ैत छैक। चन्दा झाक अनुवाद वस्तुतः टीकाक कोटि मे अबैत अछि। संस्कृतक जे टीकाकार होइत छलाह (जेना मल्लिनाथ) तनिकर स्रोतभाषा आ लक्ष्य-भाषा, दुनू संस्कृते होइत छलनि, आ संस्कृत मे तँ ई पद्धति नीक चलि सकैत छल, मुदा एहि पद्धतिक आश्रय लय जँ द्विभाषिक टीका कयल जाय तँ बहुतो प्रकारक दोष आबि जाइत अछि। चन्दा झाक अनुवाद मे ई सभ दोष सुलभतया प्राप्य अछि।

संस्कृत एक श्लिष्ट योगात्मक भाषा थिक। एकर अपन विशिष्ट प्रकृति अछि, जे कि मैथिली सँ भिन्न अछि। तें संस्कृत सँ मैथिली मे अनुवाद करक काल अनेक समस्या उत्पन्न होइत अछि। नीक अनुवाद लेल ई विचारणीय थिक जे अनुवादक (Translator) एहि समस्या सभ सँ जूझैत अछि आ कि शॉर्ट कट ध' क' बढ़ि जाइत अछि।

प्रत्येक भाषाक अपन संरचनात्मक विशेषता होइत अछि आ अपन पृथक अभिव्यक्ति-शैली होइत अछि। ई देखब परम आवश्यक थिक जे अनुवाद स्रोत भाषा (जेना संस्कृत) क अभिव्यक्ति-शैली आ संरचना मे नहि भ' क' लक्ष्य भाषा (जेना मैथिली) क अभिव्यक्ति शैली आ संरचना मे होयबाक चाही। चन्दा झा कृत 'पुरुष परीक्षा' अनुवाद मे यैह बात नहि भेल अछि। स्रोत भाषाक संरचना आ अभिव्यक्ति-शैली लक्ष्य भाषाक माथ पर सवार अछि। यैह कारण थिक जे अनुवादक भाषा अत्यन्त बोझिल, दुरूह आ अस्वाभाविक अछि।

'उत्कृत्त-दन्तगुसलानि मुखानि कर्त्तुम् इच्छामि'क अनुवाद जँ एना कयल जाय—'उखाड़ि देल गेल अछि मूसलरूपी दाँत जाहि मे सँ, एहन मुँह करय चाहैत छी'—तँ अहाँ कें कियै अस्वाभाविक नहि लागत?

एहि पोथीक बाद अनेकानेक संस्कृत ग्रन्थक अनुवाद मैथिली मे प्रस्तुत कयल गेल। काव्यग्रन्थक अतिरिक्त, नाटक, उपन्यास, कथा आदि अनेक विधाक पोथी सभ मैथिली मे उपलब्ध अछि।

एखन धरि विभिन्न भाषाक शताधिक पुस्तकक अनुवाद मैथिली मे कयल जा चुकल अछि। ई स्रोत भाषा सभ दू प्रकारक अछि—(1) बंगला, मराठी आदि भारतीय भाषा तथा (2) अँग्रेजी आदि विदेशी भाषा। मैथिली मे जे अनुवाद सभ प्रस्तुत कयल अछि, सेहो दू रूप मे प्राप्य अछि—(1) पुस्तकाकार रूप मे तथा (2) पत्र-पत्रिका मे प्रकाशित।

एखन धरि गद्य-विधा मे जतेक अनूदित पोथी प्रस्तुत कयल गेल अछि, ताहि सभ कें मोटामोटी तीन कोटि मे विभाजित कयल जा सकैछ—

(1) सृजनात्मक गद्य-विधाक पोथी—उपन्यास, कथा, संस्मरण, नाटक, आत्मकथा आदि।

(2) आलोचनात्मक गद्य-विधाक पोथी—काव्यशास्त्र, इतिहास, जीवनी इत्यादि।

(3) साहित्येतर शास्त्रीय गद्यविधाक पोथी—धर्मशास्त्र-कर्मकाण्ड, आदि।

जाहि भारतीय भाषा सभ सँ मैथिली मे अनुवाद कयल गेल अछि, ताहि मे सँ प्रमुख अछि—संस्कृत, बंगला, हिन्दी, उर्दू, गुजराती, मराठी, असमिया, तमिल आदि। विदेशी भाषा सभ मे अंग्रेजी सँ अनुवाद प्रमुख अछि। कैक गोट भारतीय भाषाक पोथीक अनुवाद सेहो अंग्रेजी मे अनूदित पाठ सँ कयल गेल अछि।

एक बात एतय देखि लेब आवश्यक जे मैथिली मे जे अनुवाद प्रस्तुत कयल गेल अछि, ताहि मे साहित्य-विषयक पोथी प्रमुखता मे अछि। एकर प्रारम्भिक कारण तँ ई जे साहित्यिक रुचिक अनुवादक लोकनि सभ दिन सँ एहि क्षेत्र मे लागल रहलाह, दोसर ई जे अनुवाद-कार्यक पाछाँ अकादमिक उद्देश्य वरीयता पर नहि रहल। साहित्य अकादेमी अथवा मैथिली अकादेमी-सन सरकारी संस्था सेहो अपना कें साहित्य धरि सीमाबद्ध रखलक।

विचारणीय थिक जे ज्ञानात्मक साहित्यक अनुवाद मैथिली मे किएक नहि भेल आ ने भ' रहल अछि। ज्ञानात्मक साहित्य मानव-सभ्यताक इतिवृत्तक अभिन्न अंग थिक। ज्ञान-विज्ञानक अभिवृद्धि जें कि संचित अनुभवक भूमिका पर होइत अछि, एहन साहित्य वैज्ञानिक अध्ययनक मूल तत्त्व थिक। मुदा, मैथिलीक तँ प्रश्ने की, राष्ट्रभाषा हिन्दी मे सेहो ज्ञानात्मक साहित्यक अनुवाद अत्यन्त दुर्बल दशा मे अछि। ज्ञान-प्रधान साहित्यक प्रस्तुतिक प्रश्न देश केर राजनीतिक, सामाजिक तथा बौद्धिक उत्कर्षक संग जुड़ल अछि। एकरा राष्ट्रीयता आ राष्ट्रीय भाषा सभक प्रश्नक संग जोहि क' देखल जायब आवश्यक अछि, जाहि दृष्टिकोणक उन्मेष एखनहु धरि एहि देसकोस मे नहि भ' सकल अछि। एही ठाम सँ एहि कारणक खोज कयल जयबाक चाही जे सामान्य विज्ञान, आयुर्विज्ञान, कृषिविज्ञान, विधि, अर्थशास्त्र, वाणिज्य, अभियांत्रिकी, दर्शनशास्त्र आदि विषयक पोथी सभक अनुवाद मैथिली मे किएक नहि कयल जा सकल।

आजुक परिप्रेक्ष्य मे कथा-साहित्य समस्त साहित्यिक विधा मे प्रमुख अछि। साहित्यक जतेक-जे प्रयोजन निर्दिष्ट अछि, ताहि सभक पूर्त्ति मे सभ सँ सक्षम विधा कथा-साहित्य थिक। मानव-अस्तित्वक रक्षा आ कल्याणकारी समाज-व्यवस्थाक निर्माणक उत्साह सँ उपजल साहित्य, आवश्यक थिक जे परस्पर बन्धुत्व-भाव, आत्मीयता आ सहयोग-सापेक्ष भूमिकाक स्थापनाक निमित्त एक-दोसरक लग पहुँचय आ विविध क्षेत्रक जनता साहित्यकारक एहि संवेदना कें चीन्हि-बूझि सकैक। अनुवादक आवश्यकता एतहि सँ प्रारम्भ होइत छैक।

विविध भाषा सभ सँ मैथिली मे अनेक उपन्यास अनूदित भेल अछि। बहुत प्रारम्भे मे, 1934-35 ईस्वीक आसपास पं. शिवानन्द चौधरी बंकिमचन्द्रक प्रसिद्ध बंगला उपन्यास 'कपालकुण्डला'क मैथिली अनुवाद प्रस्तुत कयने छलाह जे कि बेस लोकप्रिय

भेल छल। ओहुना, मिथिला मे बंगला साहित्यक पाठक सभ दिन सँ बेस संख्या मे रहल अछि। जातीय गौरव कें पुनर्जागृत करबाक उत्साह सँ अनूदित ई उपन्यास भाषा-संरचना आ अभिव्यक्ति-शैलीक दृष्टिजे बहुत सफल नहि कहल जायत। शिवानन्द चौधरी मुरलीधर झा-स्कूलक पंडित छलाह, आ हुनक भाषा पर 'मोद'क प्रभूत प्रभाव अछि। कोनहु अनुवादकेर जे दू प्रमुख पक्ष होइत अछि—भाषिक संरचना आ विषयवस्तुक ज्ञान—ताहि मे सँ भाषिक संरचनाक कसावटि आ प्रवाह एहि उपन्यासक भाषा मे देखना नहि जाइछ। आ, एही कारणेँ उपन्यासक भाषा कथा-रसक अनुकूल नहि भ' क' आस्वाद मे बाधक बनि जाइत अछि।

एहि कालक थोड़बे पछाति एक प्रतिभावान अनुवादकक प्रवेश मैथिली-जगत मे होइत अछि, जनिका मे हमरा लोकनि कथा-रसक अनुकूल भाषा बुनबाक आ कसावटि-सहित प्रवहमान शैली रचबाक अपूर्व कौशल देखैत छी। ई व्यक्ति छलाह—पं. काशीनाथ झा। पं. झा महान कवि काञ्चीनाथ झा 'किरण'क अग्रज छलाह, जनिकर निधन अल्पायु मे भ' गेलनि। एक सुविकसित भाषिक चेतनाक संग-संग पं. काशीनाथ झा लग अनुवाद-कार्यक एक सुचिन्तित योजना सेहो छलनि, आ बंगलाक अनेक उपन्यासक अनुवाद ओ सिरिज मे कयने छलाह। प्रसिद्ध इतिहासकार आ बंगला लेखक रमेशचन्द्र दत्तक तीन गोट उपन्यास—'राजपूत जीवनसन्ध्या', 'महाराष्ट्र जीवनप्रभात' तथा 'माधवी-कंकण'—क अनुवाद ओ कयने रहथि, जे प्रायः पुस्तकाकार तँ नहि छपल, मुदा पुरना 'मिथिला मिहिर' तथा आन तत्कालीन पत्रिका सभ मे एकर अंश प्रकाशित भेंटैत अछि। प्राप्त सूचनानुसार ओ अन्यान्यो बंगला उपन्यासक अनुवाद कयने छलाह, जे कि एखनहु अप्रकाशित अछि।

पं. उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास' शरच्चन्द्रक दू गोट प्रसिद्ध बंगला उपन्यास 'विप्रदास' तथा 'वाभनक वेटी'—क अनुवाद प्रस्तुत कयलनि। ई उपन्यास सभ खूब पढ़ल गेल आ वेस चर्चित भेल।

एहि ठाम ई कहब हमरा प्रासंगिक बुझना जाइत अछि जे अनुवाद-क्रम मे एक कुशल आ योग्य अनुवादक एहि तीन प्रक्रिया सँ गुजरैत अछि—विश्लेषण, अंतरण तथा पुनर्रचना। विश्लेषण जतय स्रोतभाषा सँ संबद्ध अछि, ओतहि पुनर्रचना लक्ष्य भाषा सँ। आ एहि दुनूक मध्य पड़ैत छैक—अंतरण। एहि बात कें एहि ग्राफक माध्यम सँ देखल जा सकैछ—

स्रोतभाषा (मूल पाठ)		लक्ष्यभाषा (अनूदित पाठ)
विश्लेषण	अंतरण	पुनर्रचना

जँ स्रोतभाषा सँ लक्ष्य भाषा मे मात्र अंतरण क' क' छोड़ि देल जाइक, लक्ष्यभाषाक प्रकृतिक अनुकूल ओकर पुनर्रचना नहि कयल जाइक तँ अनुवादक भाषा कथमपि सहज आ स्वाभाविक नहि भ' सकैछ। एहि लेल विचारब ई आवश्यक अछि जे अनुवादक

भाषाक इकाइ (यूनिट) ककरा मानैत अछि—शब्द कें कि पदबन्धकें कि उपवाक्यकें कि वाक्यकें आ कि पाराग्राफ कें ? जँ शब्द कें यूनिट मानि क' चलल जाय तँ अनुवादक जे दुर्गति होयतैक, तकर घनेरो उदाहरण मैथिली मे प्राप्त अछि। प्रसंगवश, एक उदाहरण—'अबे ओ चमगादड़ो अब मुझे सोने दो' एहि वाक्यक अनुवाद एक अनुवादक एहि तरहें करैत छथि—'अरे ओ चमगुदड़ी सभ, आब हमरा सुतय दे' देखबाक थिक जे एतय 'चमगादड़' (हिन्दी) केर प्रयोग मोहाबराक विशेषार्थ मे भेल अछि, जकरा लेल मैथिली मे ई शब्द प्रचलित नहि अछि। तहिना एक दोसर अनुवादक "The family had its origin at Bispi still a prosperous village some 16 miles north-west of Darbhanga." केर अनुवाद एहि तरहें करैत छथि—'दरभंगा सँ करीब 16 मील उत्तर-पश्चिम मे अखनो स्थित समृद्ध गाम बिसफी मे एहि परिवारक जड़ि रहैक' ('विद्यापति', रमानाथ झाक मै. अनुवाद, सा. अकादेमी, पृ.-7) एतय अंग्रेजी शब्द 'ओरिजिन' केर अनुवाद 'जड़ि' देल गेल अछि, जखन कि होयबाक चाही—मूलग्राम। तहिना, 'स्टेप ब्रदर'क लेल शब्द देल गेल अछि—सतौत भाइ। (पृ. 8) जखन कि मिथिलाक सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य मे 'सतौत' शब्द मात्र एहि अर्थक बोध करयबाक लेल पर्याप्त अछि।

एहन अनेकानेक उदाहरण ताकि क' बहार कयल जा सकैत अछि, मुदा से हमर इष्ट नहि थिक। हम कहय मात्र एतबे चाहैत छी जे जँ स्रोत भाषाक रचनाक लक्ष्य भाषा मे पुनर्रचना नहि कयल जाय आ शब्द कें यूनिट मानि क' चलल जाय तँ ओ अनुवादक सफल नहि होइत छैक। अनुवादक कें दू भिन्न-भिन्न समूहक प्रति एक्कहि संग निष्ठावान होअय पड़ैत छैक—मूल रचनाकारक प्रति अर्थबोधक दृष्टि सँ आ पाठकक प्रति शुद्ध-सुवोध संप्रेषणक दृष्टि सँ। उपर्युक्त प्रक्रिया अपनौने विना एहि दुनू निष्ठा कें खंडित होयबाक अंदेशा रहैत छैक।

पं. उपेन्द्र नाथ झा व्यास अपन अनुवाद सँ पुनर्रचनाक प्रक्रिया धरि नहि पहुँचि सकलाह अछि, आ सैह हुनका द्वारा अनूदित उपन्यास सभक कमी थिक। जँ पं. व्यास अंग्रेजी सँ कोनहु उपन्यासक अनुवाद कयने रहितथि तँ कदाचित भाषिक संरचनाक एतेक दोष नहि रहैत, कारण अंग्रेजी आ मैथिली भिन्न-भिन्न प्रकृतिक भाषा थिक आ मैथिली मे अनुवाद करक काल एकर पुनर्रचना एक आवश्यक शर्त्त भ' जाइछ। मुदा जँ कि बंगला आ मैथिली समान प्रकृतिक भाषा थिक, तँ एकर अनुवाद मे ई खतरा रहैत छैक आ तँ एहन अनुवाद एक कठिन काज थिक। कहब आवश्यक नहि जे संस्कृत सँ मैथिली मे जे अनुवाद सभ भेल अछि, तकरहु संग अपरिहार्य रूप सँ ई खतरा बनल रहलैक अछि।

'विप्रदास'क वाक्य-रचनाक उदाहरण देखल जाय—

'विप्रदासक दुनू आँखि मुद्रित, हुनक बलिष्ठ दीर्घ देह आसन पर स्तब्ध भेल छन्हि, ऊपरक वातीक ज्योति, हुनक मुँह, कपार पर प्रतिफलित भ' पड़ैत छन्हि,—विशेष किछु

नहि, प्रायः कोनो आन समय देखला सँ वन्दना हँस' लगतथि, किन्तु तन्द्राजड़ित दृष्टि मे ई मूर्त्ति आइ हिनका मुग्ध क' देलकन्हि' (पृ. 62)

ई बात निश्चित जे पं. व्यास स्रोतभाषाक कथ्य आ शैलीगत सौन्दर्यक रक्षाक चैलेंज केँ खूब सफलतापूर्वक स्वीकारलनि आ निमाहलनि अछि, आ हिनक भाषा मे अपेक्षित सांस्कृतिक तत्त्व पर्याप्त मात्रा मे विद्यमान अछि। मुदा, एहि सभक रक्षा करितो सहज स्वाभाविक, रोचक तथा प्रवहमान भाषा-संरचना कोन तरहेँ बुनल जा सकैछ, तकर उदाहरण लेल हम शरच्चन्द्रक उपन्यास 'पल्ली समाज'क अयोध्यानाथ सिंह ठाकुरक द्वारा अनूदित अंश केँ देखबाक आग्रह करैत छी–

'तखन बौआक जन्म नहि भेल छलैक। मोने-मोन गूर-चाउर खाइत छल जे जदु मिश्रक सम्पति हथिया लेब। मुदा जखन मोनक मनोरथ मोनहि रहि गेलनि तँ घेरव सँ से टोना करौलक उकलगौना जे छबे मास मे बुचियाक माथक सिन्नूर धोआ गेलैक।'

इलारानी सिंहक अनुवाद 'विषवृक्ष' (बंगला-बंकिमचन्द्र), नवीन चौधरीक अनुवाद 'माटिमंगल' (तमिल) तथा रामदेव झाक अनुवाद 'सगाइ' (उर्दू, राजिन्दर सिंह बेदी) एहि दृष्टिए महत्त्वपूर्ण अछि जे वातावरणक पुनर्सृष्टि करबा मे ई अनुवादक लोकनि खूब सफल रहलाह अछि, आ निश्चिते से पुनर्रचनाक प्रक्रिया सँ गुजरलाक बादे संभव भेलैक अछि। ई तखनहि संभव भ' सकैछ जँ अनुवादक मूल रचनाक परिवेश केँ आत्मसात क' लिअय, आ अपन आग्रह आ संस्कार सँ मुक्त भ' क' अनुवाद-कर्म करय जकरा कि इलियट कविक सन्दर्भ मे Escape from Personality कहैत छथि।

आब हम दू टा महत्त्वपूर्ण अनुवादक, जे कि पुनर्रचनाक कला मे दक्ष दथि, केर चर्चा करब। ई छथि–दीनानाथ झा तथा श्यामानन्द। दीनानाथ झा अंग्रेजीक दू गोट प्रसिद्ध उपन्यासक अनुवाद मैथिली मे प्रस्तुत कयलनि 'वेकफील्डक पादरी' (ओलिवर गोल्डस्मिथ) तथा 'रसेलस। Vecar of Welfield क मैथिली अनुवाद सभ तरहेँ एक विशिष्ट अनुवाद थिक। सहज आ रोचक भाषा दीनानाथ झाक पहिल विशेषता थिकनि। सूक्ष्म मनोभाव, मनोवैज्ञानिक विश्लेषण तथा तरल संवेदनाक अभिव्यक्ति बला प्रसंग सभक अनुवाद कोनहु अनुवादक केँ फिरिसान क' छोड़ैत छैक, मुदा एहने भाग सभक स्वाभाविक अनुवाद कोनहु अनुवादकक योग्यताक परिचायक सेहो होइत छैक। श्यामानन्द द्वारा अनूदित उपन्यास 'जीवनभूमि' (दि गुड अर्थ, पर्ल एस. बक) मे सेहो ई विशेषता भेटैत अछि।

भाषिक टटकापनक एक उदाहरण देखल जाय–'वाँग बाहर धुरखुर लग बैसल सोचैत रहय जे आब कोनो उपाय नहि अछि। सहैत-सहैत एहि ठाम सभ केँ मरय पड़त। भगवान एतबो करथि जे सर्वप्रथम हमरहि मारथि जे हम अपन परिवारक दुखद अन्त नहि देखी'।' (पृ.-41)

श्यामानन्द 'गुलिवर्स ट्रेवल'क अनुवाद 'गुल्लीक यात्रा' नामेँ कयने छथि, ईहो एक अनुकरणीय प्रयास थिक। शैलेन्द्र मोहन झाक अनुवाद 'इयारुइंगम' (मूल असमिया,

वीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य सेहो) एक नीक कोटिक अनुवाद थिक।

सरिसब पाही सँ डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क निर्देशन तथा डॉ. कीर्त्यानन्द कुमरक संपादन मे 'प्रतिबिम्ब' नाम सँ एक कथासंग्रह 1951-52 मे छपल रहैक। एहि पोथी मे विविध भारतीय भाषा सभक कथा देल गेल छलैक। विशेषता ई जे एकर लेखक सभ सुविख्यात शलाकापुरुष लोकनि छलाह। डॉ. जाकिर हुसैनक कथा 'अब्बू खाँक बकरी' एकर उल्लेख्य रचना थिक। सी. राजगोपालाचारी तथा जयप्रकाश नारायणक कथा सेहो एहि मे संकलित रहैक। एहि संकलनक भाषा विशुद्धतः लोकभाषाक प्रतिरूप थिक आ डॉ. किरणक भाषा-सम्बन्धी मान्यताक उदाहरण थिक।

आचार्य सुरेन्द्र झा सुमन द्वारा अनूदित विशाल कथा ग्रन्थ 'रवीन्द्र कथावली' दू भाग मे छपि चुकल अछि। ओजपूर्ण गद्यक कतोक उदाहरण एहि मे देखल जा सकैछ। भावुकतापूर्ण आ तरल संवेदनात्मक कथांशक अनुवाद सुमन जी बहुत मनभावन रीतिञे कयलनि अछि।

हितोपदेशक अनेक अनुवाद मैथिली मे भेल अछि। तंत्रनाथ झाक प्रस्तुति 'हितोपदेशसार' एक उत्तम अनुवादक उदाहरण थिक।

मैथिली मे बहुत रास भाषा सभ सँ नाटकक अनुवाद प्रस्तुत कयल गेल। प्रारम्भिके काल मे सरस कवि ईशनाथ झा संस्कृत नाटक 'शकुन्तला'क अनुवाद कयने छलाह, जे अनूदित साहित्यक एक कीर्त्तिमान थिक। ई नाटक बहुत लोकप्रिय भेल छलैक, आ एकरहि प्रभाव मे तदुपरान्त अनेको नाटकक अनुवाद कयल गेल छल। एहि नाटकक विशेपता ई जे अलंकार-बहुल बिम्ब-योजना आ समासप्रधान भाषाक कारण जे संस्कृत सँ अनुवाद मे भारी समस्या अबैत छैक, तकर व्यावहारिक समाधान ई प्रस्तुत करैत अछि। कालिदासक बिम्बयोजाना सभ केँ पुनर्गठित क' क' एकरा बेस मनभावन बनाओल गेल छैक। काव्यात्मक, कल्पनामूलक मनोभावक अभिव्यक्ति लेल कोन प्रकारक गद्य व्यवहार्य थिक, तकर उदाहरण एहि नाटकक भाषा थिक। सुधाकर झा 'शास्त्री' अनुवाद 'मुद्राराक्षस'; पं. गोविन्द झाक अनुवाद 'मालविकाग्निमित्र' एहि परंपराक पठनीय अनुवाद थिक, यद्यपि कि पं. गोविन्द झाक 'मालविकाग्निमित्र' हुनक अनुवादकीय जीवनक प्रथम प्रयास छल, आ तेँ एकर अपन अनेक सीमा छलै।

मैथिलीक आद्य गद्यकार श्रीवल्लभ झा हर्षक नाटक 'रत्नावली'क अनुवाद प्रारम्भ कयने रहथि, जकरा ओ पूरा नहि क' सकलाह, आ हुनक भाषिक संरचना केँ सुव्यवस्थित तथा अद्यतन करैत डॉ. परमानन्द झा शास्त्री एकर अनुवाद कयलनि। 'रत्नावली'क एक आओर अनुवाद पं. सुन्दर झा शास्त्री कयलनि, मुदा भावपरक तथा पाठपरक समतुल्यताक-दृष्टिञे डॉ. परमानन्द झा शास्त्रीक अनुवाद कतहु बेसी सफल छनि, जखन कि भाषा केर समतुल्यता केँ पं. सुन्दर झा शास्त्री बखूबी निमाहलनि अछि। डॉ. राजकुमार मिश्र द्वारा सम्पादित 'उत्तररामचरित'क अनुवाद सेहो द्रष्टव्य थिक।

संस्कृत नाटकक संग एकटा बड़ पैघ सीमा थिक, आ से ई जे अपन मौलिको रूप मे ओ अभिनेयताक दृष्टिएँ पछुआयल कृति होइत अछि। जँ ई बात इष्ट नहि हो तँ हम कहब जे संस्कृत नाटकक रंग-शैली पश्चिमी रंगमंच सँ प्रभावित आधुनिक नाट्यपद्धति सँ बहुत फराक अछि। ई नाटक सभ एक विशिष्ट सांस्कृतिक आ बौद्धिक पृष्ठभूमिक दर्शकक लेल लिखल गेल छल। एकर अनुवादक जखन प्रश्न अबैछ तँ दिक्कत ई जे एकर अनुवाद एहन संस्कृत पंडित लोकनि कयलनि, जाहि मे सँ अधिकांश केँ रंगकर्मक व्यावहारिक अनुभव नहि छलनि। स्वाभाविक थिक जे अधिकांश नाटक अपन मंचीय प्रभाव मे भोथ अछि।

एतय कहब आवश्यक लगैत अछि जे जेना साहित्यक भिन्न-भिन्न युग होइछ, आ प्रत्येक युग मे किछु सामान्य समरूप वैशिष्ट्य पाओल जाइछ, तेना अनुवादक क्षेत्र मे नहि होइछ। अनुवाद पूर्णतः व्यक्तिनिष्ठ विधा थिक, आ अन्ततः अनुवादकक व्यक्तिगत योग्यते टा मात्र एकर नीक वा अधलाह होयबा लेल उत्तरदायी होइछ। उदाहरणक लेल लाल दासक अनुवाद एक सफल आ मनोरम अनुवाद थिक, मुदा पं. उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास'क अनुवाद केँ अनुवाद-विज्ञानक कसौटी पर किन्नहु नीक नहि कहल जा सकैछ। तहिना, युवा अनुवादक विभा रानी नीक अनुवादक नहि छथि, आ सत्तरि वर्खक पं. गोविन्द झा एक कुशल आ श्रेष्ठ अनुवादक थिकाह।

अस्तु। ओना तँ कोनहु सृजनात्मक विधाक अनुवाद स्वयं मे एक कठिन आ परिश्रमसाध्य प्रक्रिया थिक। मुदा नाटकक अनुवाद करब तँ सभ सँ जटिल होइछ। मात्र भाषान्तर क' देने अथवा मूल लेखकक अभिव्यक्ति केँ रूपान्तरित क' देने नाटकक अनुवाद पूर्ण नहि भ' जाइछ। नाटक एक संवादात्मक कार्यव्यापारमूलक विधा थिक। नाटकक रूप मे कोनहु रचनाक स्वीकृतिक लेल ओकरा अभिनेयताक गुण सँ कुण्डाबोर भेनाइ अपरिहार्य होइछ, जखन कि कतोक बेर एहन होइछ जे मूल रचना तँ नाटक रहैछ, मुदा अनूदित भेला पर ओकर नाटकीयता कपूर जकाँ बिला जाइछ। एकर उदाहरण लेल कृपानन्द मिश्रक नाटक देखल जा सकैछ—'संस्कृतक संस्कृति', जे कि राजा राधिकारमण प्रसादसिंहक कथा 'कहीं धूप कहीं छाया'क नाट्यरूपान्तर थिक।

तँ, कह' हम ई चाहैत छी जे ओना तँ नाट्य-रचनहि स्वयं मे एक कठिन काज थिक, आ ओकर अनुवाद तँ आरो कठिन। नाट्यानुवाद केँ आवश्यक रूप सँ मूल रचने जकाँ अभिनेय होयबाक चाही, आ से तखनहि भ' सकैछ, जँ अनुवादक कोनहु रंगकर्मी हो अथवा रंगमंचक सीमा सँ पूर्ण परिचित कोनो साहित्यकार हो। एहि लेल सामान्य रंग-विधान आ मूल नाटकक रंग-परंपरा—दुनू सँ परिचिति आवश्यक अछि। से भेले पर अनुवादक भावानुकूल उपयुक्त शब्दक चयन क' सकत, आ समूचा पद-रचना एहि प्रकारक क' सकत, जे लक्ष्य भाषा मे मूल नाटक केँ सफलतापूर्वक अभिनेय बना सकय। कथानक, विचार-तत्त्व, चरित्र, भाव, वातावरण, संघर्ष—सभ कथू केँ संवादेक माध्यमे जेँ कि नाटक मे प्रस्तुत कयल जाइछ, मूल रचनाक पुनर्रचना कयने बिना अभीष्ट प्रभाव

आनब कथमपि संभव नहि अछि। सामान्य बोलचाल आ आँचलिक शब्द सभक प्रयोग एहि प्रभाव कें प्राप्त करबा मे सहायक होइछ। विभिन्न पात्रक व्यक्तित्व-दर्शन ओकरा द्वारा प्रयुक्त भाषाक माध्यमे कराओल जाइछ, आ एहन प्रसंगक अनुवाद कोनहु नाट्यानुवादकक हेतु सफलताक कसौटी थिक।

एही दृष्टिजे हम देखैत छी तँ किछु विशिष्ट नाट्यानुवादकक नाम एक्कहि संग हमरा आगाँ आबि उपस्थित होइछ, जे सफल अनुवादक उदाहरण देलनि अछि। राजेन्द्र झा 'स्वतंत्र' अंग्रेजी सँ शेक्सपीरक दू टा नाटक 'एज यू लाइक इट' तथा 'ओथेलो'क अनुवाद क्रमशः 'राजमणि' तथा 'देशमणि' नामेँ कयलनि अछि। बाबू साहेब चौधरी द्वारा बंगला सँ अनूदित डी. एल. राय केर नाटक चन्द्रगुप्त (जे कि 'चाणक्य' नामेँ छपल अछि) एक नीक अनुवादक उदाहरण थिक। रंगकर्मक समस्त प्रक्रिया सँ परिचित छत्रानन्द सिंह झाक अनुवाद 'नट सम्राट' (मूल-मराठी, विजय तेंदुलकर) एक रम्य रचना थिक, जे कि सतत मूल-सन प्रवाह आ गतिमयता सँ सराबोर अछि। मुदा, नाट्यानुवादक चरम उदाहरण थिक—अयोध्यानाथ सिंह ठाकुरक 'अपन गाम' (मूल बंगला, शरच्चन्द्र), जकर एक प्रसंग देखल जाय—

वेणी—अइ गप कें कने ठीक सँ भजिअबियौक तँ गोविन्द कका!

गोविन्द—कने हमरा पैस' तँ दिय'। हम नाड़ी महक गप बहार क' लेबै। मुदा, देखब। कते नंगटबा हमरा द' लगाओत-बुझाओत। एक्केटा कथा मोन राखब। अहाँक गोविन्द कका अहाँक छोड़ि अनकर नहि हेथिन।

वेणी—ताहू मे कहबाक काज छैक! एखन रमा सँ भेंट कर' गेल छलहुँ।

गोविन्द—की गप भेल?

वेणी—ओ सब तँ नहियै जेतनि। ओकर कोनो लगुओ-भगुओ नहि जेतनि। मुदा, अहूँ देखबै।

गोविन्द—कहबाक काज छै? उद्योग-आयोजन तँ करब' दिय' तखन ने नीक जकाँ घिनेतैक। (पृ.-14-15)

किछु अन्य उल्लेख्य नाट्यानुवाद एहि तरहेँ अछि—मौलियरक दू नाटक—अनु. रमानंद झा रमण, सलोमा—(मूल ऑस्कर वाइल्ड) अनु. इलारानी सिंह, अन्हेर नगरी (मूल भारतेन्दु हरिश्चन्द्र) अनु. प्रबोधना. सिंह, प्रेतक छाया (मूल इब्सन) अनु. दामोदर ठाकुर (अद्यावधि अप्रकाशित), एकरा अतिरिक्त पं. सुरेन्द्र झा 'सुमन' द्वारा अनूदित 'रवीन्द्र नाटकावली' सेहो उल्लेख्य रचना थिक।

किछुएक संस्मरण, यात्रावृत्त, आत्मकथा आदि विधाक रचना सभक अनुवाद सेहो मैथिली मे प्रस्तुत कयल गेल अछि। 'कोशी प्रांगणक चिट्ठी' (मूल—विभूतिभूषण मुखोपाध्याय, अनु. मणिपद्म) एक सफल अनुवादक उदाहरण थिक। एकर पाठ मे जे रोचकता आ प्रवाह छैक, तकर सभ सँ पैघ कारण विषय-वस्तु तथा वातावरण सँ अनुवादकक आत्यन्तिक रूपेँ परिचित होयब थिक। कैक स्थल पर अनुवादक अपन स्वतंत्र मेधाक

परिचय देलनि अछि, मुदा से ततेक बेसियो नहि कि जकरा अनुवादकक स्वेच्छारिता कहल जाइक। महात्मा गांधीक गुजराती आत्मकथा 'हमर सत्यक प्रयोग' तथा 'म. म. सर गंगानाथ झाक आत्मकथा—दू गोट प्रसिद्ध आत्मकथा—ग्रन्थ थिक, जकर दुनूक अनुवाद अंग्रेजी सँ क्रमशः योगानन्द झा तथा सुशील झा कयलनि अछि। ई दुनू अनुवाद भाषा-संरचनाक दृष्टिञे सफल आ मनोरम बनि पड़ल अछि। सुशील झा एक सुभ्यस्त अनुवादक छथि, जखन कि योगानन्द झा मे एक योग्य अनुवादकक पर्याप्त प्रतिभा छनि। 'सत्यक प्रयोग' केर एक-एक पृष्ठ हुनक प्रतिभा आ श्रम केर साक्षी थिक।

ग्रियर्सनक दू गोट पोथी 'बिहारक ग्राम-जीवन' तथा भारतक भाषा-सर्वेक्षण (मैथिली खंड) क अनुवाद मैथिली मे भेल अछि। ई एक महत्त्वपूर्ण कार्य थिक। एकर अनुवाद बहुलांश मे नीक अछि, मुदा अनुवाद हेतु अनुवादक लोकनि जे पद्धति अपनौलनि—शाब्दिक अनुवाद पद्धति—तकरा कारण कतोक ठाम भयावह दोष उपस्थित भेलैक अछि। अंग्रेजी सँ मैथिली अनुवाद मे प्रायः दू गोट प्रधान खतरा देखल जाइत अछि—(1) परिभाषिक शब्दक विशुद्ध अनुवाद मे त्रुटि तथा (2) कर्त्तृवाच्य तथा कर्मवाच्यक परस्पर अनुवाद मे लटपटी, जकरा कारण अनूदित पाठ अनुवाद-गंधी आ विकलांग होइत अछि, आ सहज-स्वाभाविक भाषाक उदाहरण नहि बनि पावैछ। कहब आवश्यक नहि जे ई दोष उपर्युक्त अनूदित पाठ सभ मे छैक।

'भारतीय साहित्यक निर्माता' सिरीज मे साहित्य अकादेमी दू दर्जन सँ बेसी पोथीक मैथिली अनुवाद छपलक अछि। ई सभटा प्रायः अंग्रेजी सँ अनूदित छैक। अंग्रजी सँ अनुवादक जे उपर्युक्त दू गोट खतरा देखौलहुँ, ताहि सँ कम्मे अनुवादक बचि पौलनि अछि। एहि पोथी सभ मे एत्तेक त्रुटि निश्चित रूप सँ एहि कारणेँ रहि गेलैक अछि जे मेधावी तथा अभ्यस्त अनुवादक लोकनि सँ अनुवाद नहि कराओल गेल अछि। सामान्यतः ई बुझि लेल गेल अछि जे स्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषाक ज्ञान टा राखब मात्र अनुवाद-कर्मक लेल पर्याप्त थिक, जखन कि ई एकदम्म निम्न कोटिक परिहार्यता थिक, असल आवश्यकता होइछ—अनुवादकीय प्रतिभा केर आ पर्याप्त अभ्यास केर।

एहि प्रकारक आलोचकीय सामग्रीक अनुवाद अपेक्षाकृत सरल होइत अछि कारण एकर कथ्य सभ तथ्यपरक आ विचार-प्रधान होइछ, कथन-प्रक्रिया स्पष्ट आ सपाट तथा शैली सेहो ऋजुतापूर्ण होइछ। मुदा, मैथिली मे जे पोथी सभ आयल अछि, तकरा देखने ईहो स्पष्ट भइये जाइछ जे ईहो अनुवाद ततेक सरल नहि अछि, जतेक कि एकरा बुझि लेल गेलैक अछि।

समस्या ई अछि जे कतोक अनुवादक स्कूली नेना जकाँ शब्दक्रम सँ अनुवाद करैत गेलाह अछि, जे सर्वथा अशुद्ध तथा भ्रामक होइत अछि। बुझबाक थिक जे भाषाक लघु एकाइ वाक्य थिक, शब्द नहि। प्रत्येक शब्द वाक्य मे प्रयुक्त भेलाक उपरान्ते अर्थ ग्रहण करैत अछि। अहाँ देखब जे एहि प्रकारक अनुवाद-कर्म मे वैह अनुवादक सफल भेलाह अछि जे वाक्य-क्रम सँ अनुवाद कयलनि अछि। एहि प्रकारक अनुवादक प्रक्रिया

मूलानुवर्त्ती होइछ, आ एहि तरहें विशिष्ट शब्द सभक अर्थच्छाया कें सेहो कुशलतापूर्वक अनूदित कयल जा सकैत अछि। एहि दृष्टिजे पं. गोविन्द झा (चंडीदास तथा नेपाली साहित्यक इतिहास) रामदेव झा, (बाणभट्ट), जयदेव मिश्र (सुधीन्द्रनाथ दत्त) तथा शैलेन्द्र मोहन झा (असमिया साहित्यक इतिहास, शरच्चन्द्र : व्यक्ति एवं कलाकार, जयदेव) श्रेष्ठ आ सफल अनुवादक उदाहरण थिक। नचिकेता, नवीन चौधरी तथा सुशील झा सेहो अपन क्षमताक प्रति आश्वस्त करैत छथि। क्षत-विक्षत तथा विकलांग अनुवादक उदाहरण थिक–'मैथिली साहित्यक इतिहास' जकर अनुवाद स्वयं मूल लेखक डॉ. जयकान्त मिश्र कयलनि अछि।

अनेक नीक अनूदित गद्य-रचना समय-समय पर पत्र-पत्रिका मे सेहो प्रकाशित होइत रहल अछि। 'वैदेही', 'मिथिला मिहिर' तथा 'अग्निपत्र'क उल्लेख हम विशेष रूप सँ करब, जाहि मे कतेको देशी-विदेशी कथा तथा अन्य ललित रचना अनूदित भ' क' छपैत रहल अछि। 'वैदेही'क कथांक (1957), मे आधुनिक कथा-धाराक अनेक विशिष्ट रचना (यथा 'रंगीन परदा') छपल छल; ईरानी, रूसी, हिन्दी, बंगला तथा उर्दू सँ पाँच गोट प्रसिद्ध कथाक अनुवाद सेहो देल गेल छल। 'अग्निपत्र' कतोक विदेशी क्रान्तिधर्मी कथा सभक अनुवाद छपलक। गुणनाथ झा द्वारा अनूदित पावेल फ्रान्त्सोउजक चेक कथा तथा अबुल मंसूर अहमदक बंगलादेशी कथा स्मरणीय रचना थिक।

कतेक गोट शास्त्रीय ग्रन्थक अनुवाद संस्कृत सँ मैथिली मे प्रस्तुत कयल गेल। एकरहु मादे थोड़ेक कहल जायब जरूरी अछि। विद्यापतिक अधिकांश संस्कृत ग्रन्थ मैथिली अनुवाद सहित प्रकाशित भ' चुकल अछि। एतदतिरिक्त कतोक आनो संस्कृत ग्रन्थ सानुवाद संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा सँ छपल अछि। मुदा, एहि अनुवाद कें अनुवाद नहि, टीका कहल जयबाक चाही, आ से टीको भ्रष्ट रूप मे। क्षमा कयल जाय। 'भ्रष्ट' हमर शब्द थिक, ओ लोकनि एकरा 'श्रेष्ठ' कहैत छथि। एहि अनुवादक भाषा मे 'पियासल छला' अथवा 'काँपि रहल छल' अहाँ कें नहि भेटत। भेटत–'पिपासित छलाह' आ 'कम्पायमान छल।' 'हितोपदेश' सन रोचक कथा-ग्रन्थक अनुवाद कोन तरहें कयल गेल अछि, देखल जाय–

संस्कृत–स वञ्चकः क्वाऽऽस्ते? मृगेणोक्तम्–मन्मांसार्थी तिष्ठत्यत्रैव।

मैथिली–ओ वञ्चक कतय अछि? मृग बाजल–हमर मांसक लोभी एतहि कतहु अछि।

संस्कृत–प्रागेव यौवनदशायामहम् अतिदुर्वृत्त आसम्।

मैथिली–पूर्व मे यौवन अवस्था मे हम अति दुष्ट आचरण वाला छलहुँ।

अस्तु, संस्कृत पंडित लोकनिक स्वान्तः सुखाय केर एहि अराजक विभाग मे थोड़ेक नीक अनुवाद सेहो आयल अछि, जकरा दिस आलोचक लोकनिक ध्यान जयबाक चाही। डॉ. देवकान्त झा द्वारा अनूदित 'दशरूपक' एक नीक अनुवाद थिक। पं. गोविन्द झा

जाहि कोनहु ग्रन्थक अनुवाद कयलनि अछि (यथा-विभागसार) से एक कीर्त्तिमान बनि गेल अछि। एहि क्षेत्र मे युवा अनुवादक लोकनिक प्रवेश आवश्यक अछि।

अन्त मे, हम दू गोट कविताक मैथिली अनुवाद प्रस्तुत क' क' अपन बात समाप्त करब। पहिल कविता ओलिवर गोल्डस्मिथक अंग्रेजी उपन्यास, 'द वेकर ऑफ वेकफील्ड'क मैथिली अनुवाद सँ लेल गेल अछि, जकर काव्य-रूपान्तर तंत्रनाथ झा कयलनि अछि। काव्यांश देखल जाय–

हे एहि वनक निवासी जोगी
काटब राति कतय हम जाय
एक इजोत ओतय देखैत छी
हमरा ओतय दिय' पहुँचाय

नहि-नहि, ओतय जाह नहि बच्चा, ओतय जाय होयतह नहि त्राण
राकस दुष्ट लोभाय रहल छह, जयबह तँ बचतह नहि प्राण
चलह लगहि मे कुटी हमर अछि, करिहह राति ओतहि विश्राम
भटकल-भूखल बाट-बटोही अबितहि रहइत छथि ओहि ठाम

आ, दोसर कविता महाकवि कालिदासक 'शकुन्तला' सँ 'यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं' श्लोक केर सरसकवि ईशनाथ झाक अनुवाद–

शकुन्तला ऋषि-संग विदा भ' सासुर जयती आइ
तेँ मन हमर बेकल एते अछि, होइए कतहु चलि जाइ
धैरज धए नयनक जल रोकल, बाझि हमर गर गेल
की कहब चिन्ता तते सताओल, ज्ञान विकल मोर भेल।

इति। आब एक प्रश्न अहाँ सँ पुछैत छी। एहि पद्यानुवाद मे जे आत्मीयता, भाषिक छटा, प्रवाह आ सहजता अहाँ केँ भेटैए, से एही आशयक कोनहु गद्यानुवाद मे किएक नहि भेटैए?

आ, एकर उत्तर थिक–अनुवादक जखन पद्यानुवाद करैत अछि तँ श्रमपूर्वक मूल रचनाक पुनर्रचना लक्ष्य भाषा मे करैए, एक-एक बिन्दु पर अपन मेधा आ अपन अध्यवसाय लगबैए। मुदा, वैह अनुवादक जखन गद्यानुवाद कर' बैसैए तँ पुनर्रचनाक बाते ओकरा मस्तिष्क सँ ससरि जाइत छैक। ओ स्कूली नेना जकाँ 'ट्रान्सलेट इन टू मैथिली' कर' लगैए। एहन अनुवाद बाँझ आ विकलांग नहि होयतैक तँ की होयतैक?